रस सम्प्रदाय

प्रस्तुति –

डॉ0 नेहा अरोरा कपूर

सहायक प्रवक्ता, हिंदी विभाग
अवध गर्ल्स डिग्री कॉलेज
लखनऊ (उत्तर प्रदे”ा)

रस सम्प्रदाय

संक्षिप्त इतिहास -

- रस भारतीय वांग्मय के प्राचीनतम शब्दो में से हैं , किन्तु इसके शास्त्रीय अर्थ का विकास ४-५ शती ईसा पू. से लेकर २-३ शती ईसा पू. तक हुआ .

- नगेन्द्र- रस परम्परा अथर्ववेद के श्रृंगार मंत्रों से आविर्भूत होकर भरत के पूर्ववर्ती आचार्यो की वाणी में प्रस्फुटित हो चुकी थी.

रस – सिद्धांत का प्रतिष्ठापक ग्रन्थ

भरतमुनि कृत **नाट्यशास्त्र**

- रसानाथर्वणादपि

रस – सूत्र

भरत –

“ **विभावानुभावव्याभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पति : ”**

अर्थात विभाव,अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है.

रस – सूत्र के व्याख्याता आचार्य

- भट्ट लोलट – उत्पत्तिवाद या आरोपवाद
- आचार्य शंकुक- अनुमितिवाद
- भट्ट नायक - भुक्तिवाद
- अभिनवगुप्त - अभिव्यक्तिवाद

रस : काव्य की आत्मा

भरत –

“ न हि रसाद्रते कश्चिदर्थ: प्रवर्तते .”

(अर्थात रस के बिना कोई अन्य अर्थ प्रबल हो ही नहीं सकता फलत: रस ही काव्य की आत्मा और उसका प्राण तत्व है.)

भामह

- मूलतः अलंकारवादी आचार्य
- मात्र श्रृंगार रस का वर्णन

दण्डी

- अलंकारवादी व भामह के अनुसरणकर्ता
- किन्तु आठों रसों का रुचिपूर्वक वर्णन

उदभट

- रस विरोधी आचार्य
- शांत नमक नवें रस की उदभावना

रूद्रभट्ट

- नव रसों का विस्तारपूर्वक वर्णन
- रस : काव्य की आत्मा

राजाभोज

- वांग्मय के तीन भेद (वक्रोक्ति , रसोक्ति एवं स्वभावोक्ति) करते हुए रसोक्ति को ही सर्वाधिक महत्व दिया .

मम्मट

- समस्त रसों , रस के अवयवों , भावों , रसदोष , रसाभास आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन

विश्वनाथ

- अपने ग्रंथ साहित्यदर्पण में रस को काव्य की आत्मा मानते हुए समस्त वाङ्गमय में रस का महत्त्व स्थापित किया एवं उसे काव्य का जीवन बताया- वाक्यं रसात्मकं काव्यं .

पं० जगन्नाथ

- रस को आत्मानंद के समान घोषित किया-
- अस्त्यत्रापि रसौ वै सः ।

एक नजर : रस – काव्य की आत्मा

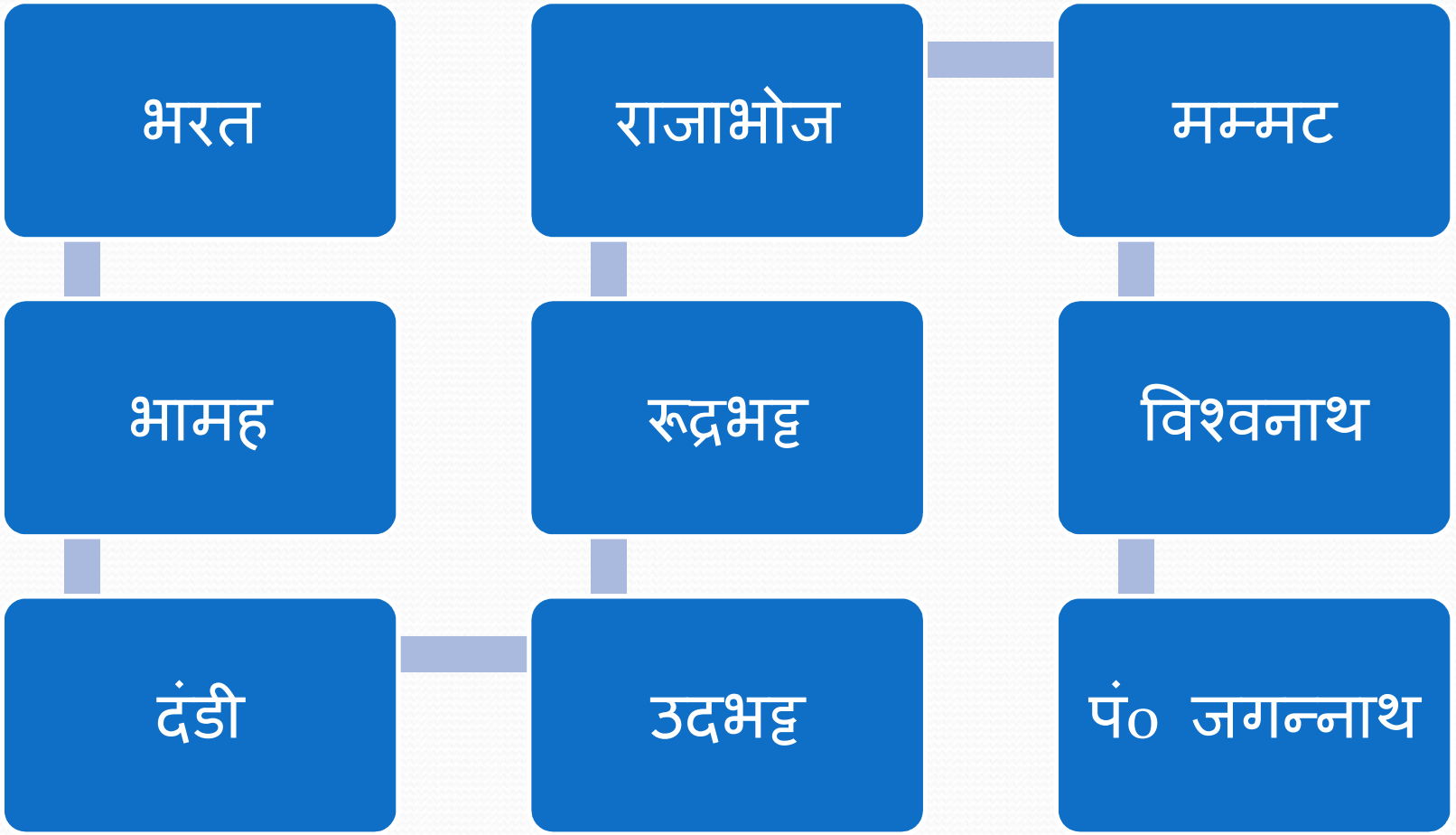

रसांग परिचय

रस के अवयव अथवा रस के अंग

भरत –

" **विभावानुभावव्याभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पति : "**

भरत ने अपने रस सूत्र में विभाव , अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति स्वीकार की है.उन्होंने अपने रस सूत्र में स्थायी भाव का उल्लेख तो नही किया किन्तु अन्यत्र उसे रस का एक महत्वपूर्ण अंग स्वीकार किया है.

केशव-

मिल विभव,अनुभाव पुनि ,संचारी सुअनुप.
व्यंग करें थिरभाव जो , सोई रस सुखरूप. -

इस प्रकार , रस के अवयव हुए -

रस के अवयव

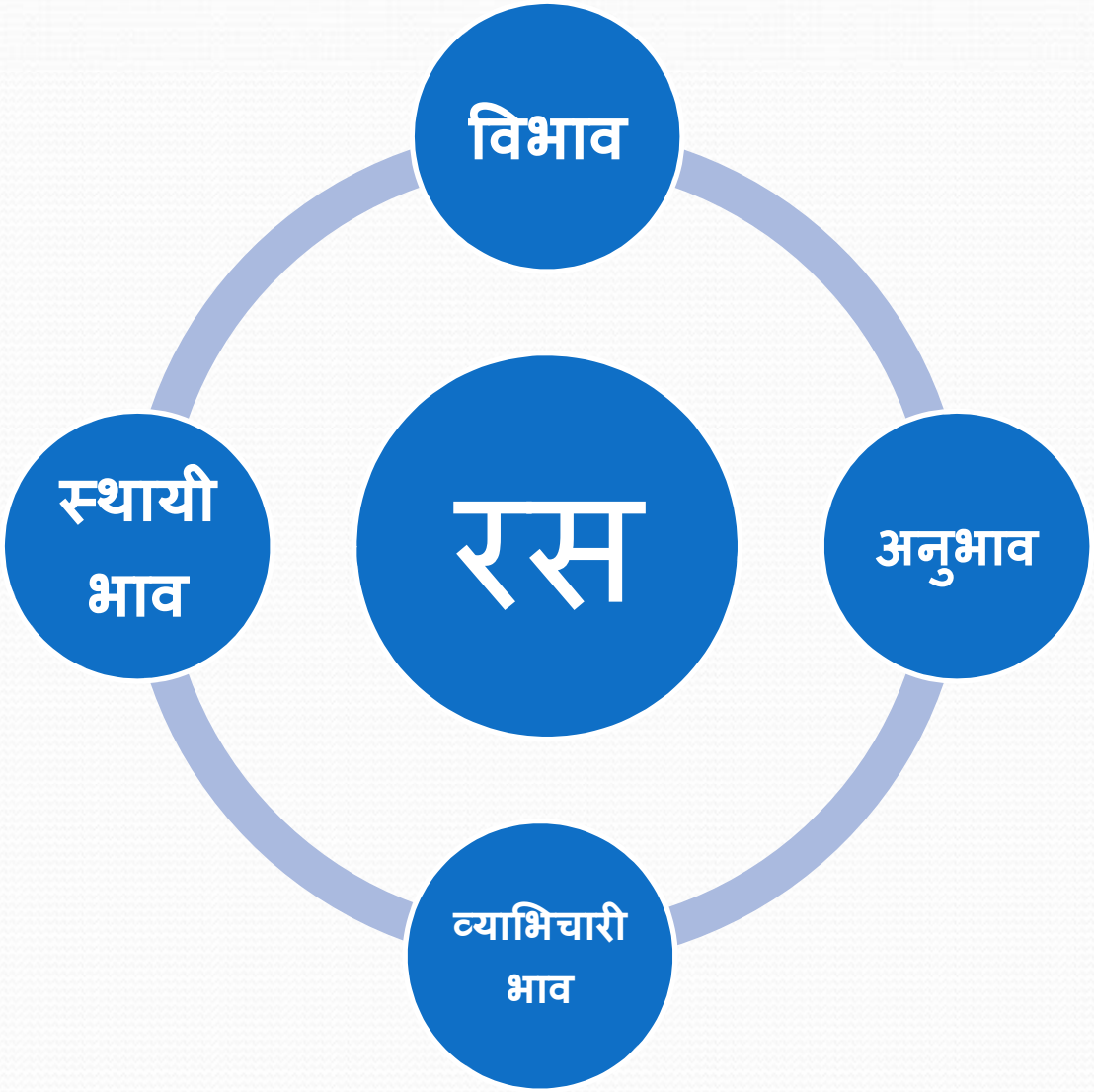

स्थायी भाव

- जो भाव ह्रदय में स्थायी रूप से निवास करते हैं , किन्तु अनुकूल कारण पाकर उत्पन्न होते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहा जाता हैं. स्थायी भाव ही रस का आधार है . यह विभाव , अनुभाव एवं संचारी भाव आदि के संयोग से रस रूप को प्राप्त होते हैं.

- संख्या – ११

स्थायी भाव	रस
रति	श्रृंगार
हास	हास्य
शोक	करुण
क्रोध	रौद्र
उत्साह	वीर
भय	भयानक
जुगुप्सा वीभत्स	
विस्मय अदभुत	
शम	शांत
वत्सलता	वात्सल्य
भगवद रति	भक्ति

विभाव

- विभाव अर्थात ‘ कारण ’.
- सहृदय (पाठक, श्रोता या दर्शक) के हृदय में मूलत : स्थित स्थायी भावों को उत्तेजित करने वाले कारण विभाव कहलाते हैं. अर्थात वे व्यक्ति या पदार्थ जो भावोत्तेजना के मूल कारण हैं , वे विभाव कहलाते हैं.
- विभावयन्ति इति विभावा :

विभाव

आलंबन विभाव

जिसका आलंबन लेकर रति आदि स्थायी भाव जाग्रत होते हैं,उन्हें आलंबन विभाव कहते हैं अर्थात जब किसी पात्र का आलंबन लेकर किसी अन्य के ह्रदय में स्थायी भाव रस रूप में परिणत होते हैं ,तो वह पात्र आलंबन विभाव कहलाता हैं .

1. विषयालंबन
2. आश्रयालंबन

उद्दीपन विभाव

जब किसी वस्तु या स्थिति को देखकर या वातालाप के द्वारा रति आदि स्थाई भाव तीव्र या उद्दीप्त होने लगते हैं तो स्थायी भाव को जाग्रत करने वाले ये कारक उद्दिपन विभाव कहलाते हैं .

1. आलंबनगत / विषयगत उद्दीपन
2. बहिर्गत उद्दीपन

- **विषयालंबन** – जिसका आलंबन लेकर अर्थात जिसके प्रति भाव जाग्रत हुआ हो वह विषयालंबन कहलाता है.

- **आश्रयालंबन** – जिसके ह्रदय में रति आदि स्थायी भाव जाग्रत होते हैं, वह आश्रयालंबन कहलाता हैं.

- उदाहरण - पुष्पवाटिका में राम को पुष्प चुनते देखकर सीता का ह्रदय रोमांचित हो उठा और उन्होंने लज्जावश अपने नेत्र झुका लिए । यहाँ राम का आलम्बन लेकर सीता के ह्रदय में भाव जागृत हुआ है अतः राम यहाँ विषयालम्बन है जबकि सीता आश्रयालम्बन है।

- **आलम्बनगत उद्दीपन** - इसमे आलम्बन की उक्तियां एवम चेष्टाएँ आती हैं जैसे कृष्ण का बाँसुरी बजाना आदि

- **बहिर्गत उद्दीपन-** इसमे बाह्य वातावरण अर्थात प्राकृतिक दृश्यों की गणना होती है जैसे- पुष्पवाटिका, यमुना तट, कोकिल कूजन आदि।

अनुभाव

- स्थायीभावो के उदय के पश्चात आश्रय में जो शारीरिक एवं मानसिक विकार दृष्टिगत होते हैं, उन्हें अनुभाव कहा जाता है। "अनुभावयन्ति इति अनुभावाः "
- भरत मुनि ने "वागंगसत्व" कहकर वाचिक, आंगिक एवम सात्विक तीन भेद बताये हैं जबकि परवर्ती आचार्यों ने सम्मिलित रूप से निम्नलिखित पाँच अनुभाव माने हैं-
- आंगिक - आश्रय की शारीरिक चेष्टाएँ एवं क्रियाएँ।
- मानसिक- अन्तः करण की भावना के अनुरूप मन में उत्पन्न हर्ष-विषाद।
- आहार्य - मन में उत्पन्न भावना के अनुरूप वेश धारण करना।वाचिक- आश्रय की वाणी से व्यक्त भाव।
- सात्विक- शरीर मे सहज रूप से प्रकट होने वाले स्वाभाविक अंग - विकार, जिनकी संख्या आठ मानी जाती है- स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वर-भंग, कंप, वैवंर्य, अश्रु और प्रलय।

संचारी या व्याभिचारीभाव

- जो भाव थोड़ी देर के लिये स्थायीभाव को पुष्ट करने के लिये सहायक रूप में आते हैं और तुरंत लुप्त हो जाते हैं, वे संचारी भाव कहलाते हैं।

- ये प्रत्येक स्थायीभाव के साथ उनके अनुकूल बनकर चल सकते है इसलिये इन्हें व्याभिचारी भाव भी कहा जाता है। इनकी संख्या 33 होती है किंतु रामचन्द्र शुक्ल आदि कुछ आधुनिक विचारकों केअनुसार इनकी कोई सीमा नहीं है। ये अनगिनत हो सकते हैं।

धन्यवाद